इकाई – 2

छन्द

इकाई की रूपरेखा

2.1 परिचय

2.2 इकाई के उद्देश्य

2.3 छन्द प्रकरणम्

2.4 अपनी प्रगति जांचिए

2.5 सारांश

2.6 मुख्य शब्दावली

2.7 अपनी प्रगति जांचिए के उत्तर

2.8 अभ्यास हेतु प्रश्न

2.9 आप ये भी पढ़ सकते हैं

2.1 परिचय

छन्दः शास्त्र के प्रवर्तक पिंगल ऋषि माने जाते हैं। छन्दः शास्त्र को वृत्तशास्त्र भी कहते हैं।

छन्द – जो रचना अक्षर, मात्रा, गति, यति आदि नियमों से युक्त होती है, उसे छन्द कहते हैं। पद्य लिखते समय अक्षरों की एक निश्चित व्यवस्था रखनी पड़ती है। यह व्यवस्था छन्द या वृत्त कहलाती है। छन्द का अर्थ है आच्छादन या आह्लादन, क्योंकि इसके द्वारा भाव या रस को आच्छादित किया जाता है अथवा पाठकों का आह्लादन (मनोरंजन) होता है।

छन्द (वृत्त) के भेद – प्रायः प्रत्येक श्लोक के चार खण्ड होते हैं, जो पाद या चरण कहे जाते हैं। जिस वृत्त के चारों पादों में समान अक्षर हों, वे समवृत्त कहलाते हैं। जिस के पहले और तीसरे तथा दूसरे और चौथे पाद अक्षरों की दृष्टि से समान हों, वे अर्ध समवृत्त कहलाते हैं। जिसके चारों पादों में अक्षरों की संख्या बराबर न हो, वे विषम वृत्त कहलाते हैं।

वर्ण या अक्षर – छन्दः शास्त्र की दृष्टि से केवल व्यंजन (क्, ख् आदि) अक्षर या वर्ण नहीं कहलाते। अकेला स्वर या व्यंजन सहित स्वर ही अक्षर कहलाता है। 'आ' 'का' और 'काम्' में छन्द शास्त्र की दृष्टि से एक ही अक्षर है, क्योंकि उनमें स्वर तो केवल एक 'आ' ही है। छन्द में अक्षर गिनते समय स्वर रहित व्यंजनों की ओर ध्यान नहीं दिया जाता है।

लघु गुरु – ह्रस्व अक्षरों (अ, इ, उ, ऋ, ऌ) को छन्द में लघु कहते हैं और दीर्घ अक्षरों (आ, ई, ऊ, ॠ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ) को गुरु कहते हैं। इस आधार पर 'क', 'कि' आदि लघु अक्षर है और 'का', 'की' आदि को गुरु अक्षर माना गया है। इसके अतिरिक्त निम्नलिखित अवस्था में भी गुरु अक्षर माना जाता है –

सानुस्वारस्थ दीर्घश्च विसर्गी च गुरुर्भवेत्।

वर्णः संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपिवा।।

अर्थात् अनुस्वारयुक्त, दीर्घ, विसर्गयुक्त और संयुक्त अक्षर से पहला अक्षर गुरु होता है। छन्द के बाद या चरण का अन्तिम अक्षर आवश्यकतानुसार लघु या गुरु दोनों माना जा सकता है। इस नियम के अनुसार 'कंस' में 'क' काल में 'का' दुःख में 'दु', और युक्त में 'यु' अक्षर गुरु हैं। गुरु का चिन्ह ऽ अथवा लघु चिन्ह (।) अथवा (–) है। गुरु को 'ग' तथा लघु का 'ल' कहा जाता है।

गण – छन्द शास्त्र में तीन–तीन अक्षरों के समूह को गण कहा गया है। ये गण आठ हैं – मगण, नगण, भगण, यगण, जगण, रगण, सगण और तगण। इन गणों के स्वरूप तथा उदाहरणों को अग्रलिखित तालिका से समझ लेना चाहिए।

गण	नाम	संक्षिप्त नाम	लक्षण	संकेत	उदाहरण
1.	मगण	म	तीनों अक्षर गुरु	ऽऽऽ	मान्धता
2.	नगण	न	तीनों अक्षर लघु	।।।	सरल
3.	भगण	भ	प्रथम अक्षर गुरु	ऽ।।	भोजन
4.	यगण	य	प्रथम अक्षर लघु	।ऽऽ	यशोदा
5.	जगण	ज	मध्यम अक्षर गुरु	।ऽ।	जवान
6.	रगण	र	मध्यम अक्षर लघु	ऽ।ऽ	राक्षसी
7.	सगण	स	अन्तिम अक्षर गुरु	।।ऽ	सविता
8.	तगण	त	अन्तिम अक्षर लघु	ऽऽ।	आकाश

गणों का स्वरूप स्मरण करने के लिए निम्नलिखित श्लोक सहायक है –

मस्त्रिगुरुः त्रिलघुश्च नकारो भादि गुरुः, पुनारदिर्लघुर्यः।

जो गुरुमध्यगतो रलमध्यः सोऽन्तगुरुः कथितोऽन्तलघुस्तः।।

अथवा

यमाताराजभानसलगाः – इस पंक्ति में अक्षरों के लघु और गुरु का जो क्रम है, वही गण का क्रम होगा। इस पंक्ति में सभी गणों का क्रम समाविष्ट है।

मात्रा – ह्रस्व या लघु अक्षर के उच्चारण में जितना समय लगता है, उसे एक मात्रा कहते हैं और दीर्घ या गुरु के उच्चारण काल को दो मात्राएं कहते हैं। अतः जब छन्दों में (मात्रिक छन्दों–जाति छन्दों में) मात्राओं की गिनती की जाती हैं, तब लघु की एक और गुरु अक्षर की दो मात्राएं गिनी जाती है। एक ही शब्द में अक्षरों और मात्राओं की संख्या समान हो सकती है और भिन्न–भिन्न भी। जैसे – 'कल' में दो अक्षर और दो ही मात्राएं। 'काल' में दो अक्षर और तीन मात्राएं हैं। 'काला' में दो अक्षर और चार मात्राएँ।

यति – छन्द के मध्य में विश्राम स्थल (अर्द्ध–विराम) को यति या विराम कहते हैं।

गति – छन्दों में अक्षरों या मात्राओं की नियत संख्या से भी काम नहीं चलता उसमें गति, लय या प्रवाह का ध्यान भी रखना पड़ता है। गति का अर्थ है – श्लोक का धारा प्रवाह में पढ़ा जाना।

छन्दों के अन्य भेद – छन्दों के मुख्य रूप से दो भेद हैं – वार्णिक छन्द और मात्रिक छन्द। वार्णिक छन्द को वृत्त तथा मात्रिक छन्द को जाति छन्द भी कहते हैं। वार्णिक छन्दों के चरणों में गुरु–लघु–क्रम। प्रायः समान होता है, परन्तु मात्रिक छन्दों में यह बन्धन नहीं होता। उक्त दोनों भेदों के तीन–तीन अवान्तर भेद भी होते हैं –

1 **सम–छन्द –** चारों चरणों में वर्ण या मात्राएं समान होती हैं।

2 **अर्ध–समछन्द –** प्रथम और तृतीय तथा द्वितीय और चतुर्थ चरणों में समान वर्ण समान मात्राएँ होती है।

3 **विषम छन्द –** प्रत्येक चरण में वर्णों की संख्या विषम होती है।

2.2 इकाई के उद्देश्य

- छन्द के स्वरूप से अवगत हो पाएंगे;
- छन्द के भेदों का विवेचन कर सकेंगे;
- पाठ्यक्रम में निर्धारित अनुष्टुप, आर्या, इन्द्रवज्रा आदि छन्दों के लक्षण तथा उदाहरणों का विश्लेषण कर सकेंगे;
- यति तथा गति की अवधारणा को समझ सकेंगे;
- लघु एवं गुरु का विश्लेषण कर सकेंगे।

2.3 छन्द प्रकरणम्

1. अनुष्टुप् (श्लोक) – (आठ अक्षरों वाला समवृत्त छन्द)

संस्कृत के छन्दों में यह सबसे अधिक प्रचलित छन्द है। मुख्यतः रामायण, महाभारत और पुराणादि में इसी छन्द का प्रयोग हुआ है। इसके प्रत्येक पाद (चरण) में आठ अक्षर होते हैं। इसे आठ अक्षरों वाला समृत्त छन्द भी कहा जा सकता है।

लक्षण – **श्लोके षष्ठं गुरुर्ज्ञेयं**
सर्वत्र लघु पंचमम्।
द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं
सप्तमं दीर्घमन्ययोः।।

अर्थात् इस छन्द के चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में आठ अक्षर होते हैं। कुल मिलाकर श्लोक में 32 अक्षर होते हैं। इसके प्रत्येक चरण में पांचवां वर्ण लघु होता है छठा गुरु होता है। द्वितीय तथा चतुर्थ चरणों का सातवां वर्ण लघु होता है। प्रथम तथा तृतीय चरणों का सातवां वर्ण गुरु। शेष वर्णों के गुरु तथा लघु विषयक कोई नियम नहीं होता।

उदाहरण – यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
। ऽ ऽ । ऽ ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
। ऽ ऽ । ऽ ।

अथवा

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये
ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ।। ऽ। ऽ

जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ।।
। । ऽ ।। ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ।। ऽ। ऽ

अन्य उदाहरण –

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयोगुणाः।।

अथवा

अतः परीक्ष्य कर्त्तव्यं विशेषात् संगतं रहः।
अज्ञात ह्रदयेष्वेवं वैरी भवति सौह्रदम्।

2. **इन्द्रवज्रा** – (त, त, ज, ग, ग, ग्यारह अक्षरों का समवृत्त)

लक्षण – स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः।

जिस छन्द के प्रत्येक पाद में दो तगण, एक जगण और दो गुरु इस वर्ण क्रम से 11 अक्षर हों, वह इन्द्रव्रजा कहलाता है।

उदाहरण –

त त ज ग ग

स्वर्गच्यु तानामि हजीव लो के

ऽ ऽ। ऽ ऽ। । ऽ। ऽ ऽ

चत्वारि चिन्हानि वसन्ति देहे।

दानं प्रसंगो मधुरा च वाणी

देवार्चनं पण्डिततर्पणंच।।

अन्य उदाहरण –

अर्थोहि कन्या परकीय एव

तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।

जातो ममायं विशदः प्रकामं

प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा।।

3. **उपेन्द्रवज्रा** – (ज, त, ज, ग, ग, ग्यारह अक्षरों का समवृत्त)

लक्षण – उपेन्द्रवज्रा जतजाः ततो गौ।

जिसके प्रत्येक पाद में क्रमशः एक जगण, एक तगण, एक जगण और दो गुरु इस क्रम से 11 अक्षर होते हैं, वह छन्द उपेन्द्रवज्रा कहलाता है।

उदाहरण –

ज त ज ग ग

त्वमेव माता च पिता त्वमेव

। ऽ। ऽ ऽ । । ऽ । ऽऽ

त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव

त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

अन्य उदाहरण –

पिता सखायो गुरवः स्त्रियश्च

न निर्गुणानां हि भवन्ति लोके।

अनन्य भक्ताः प्रियवादिनश्च

हिताश्च वश्याश्च भवन्ति राजन्।।

4. उपजाति – (ग्यारह अक्षरों वाला समवृत्त)

लक्षण – अनन्तरोदीरित लक्ष्म भाजौ

पादौ यदीयावुपजातयस्ताः।

इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु

वदन्ति जातिष्विदमेव नाम।।

अर्थात् इससे पूर्व कहे गए इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के चिन्हों को धारण करने वाले जिनके दो–दो चरण हों अर्थात् जिस पद्य के पादों में इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा छन्दों का मिश्रण हो और प्रत्येक पाद में 11 अक्षर हों उसे उपजाति कहते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि छन्दों का मिश्रण बराबर–बराबर हो। यह भी सम्भव है कि एक पद्य में उक्त दोनों छन्दों के दो–दो पाद हों अथवा यह भी सम्भव है कि चारों चरणों में से एक में इन्द्रवज्रा छन्द हो और शेष तीन चरणों में उससे भिन्न छन्द हों। इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के अतिरिक्त अन्य छन्दों के मिश्रण होने पर भी, उस छन्द को भी उपजाति ही कहते हैं।

इस प्रकार इसके दो भेद हो जाते हैं – 1. अर्द्ध–सम उपजाति – जिसके किन्हीं दो चरणों में इन्द्रवज्रा तथा दो चरणों में उपेन्द्रवज्रा छन्द हों। विषम उपजाति – इसमें उक्त दोनों छन्दों में किसी एक का एक चरण हो और शेष में तीन चरण उससे भिन्न के हों।

(i) **उदाहरण –** (अर्द्ध–समवृत्त उपजाति)

तगण तगण जगण गुरु गुरु = इन्द्रवज्रा

एकात पत्रं जगतः प्रभुत्वं

ऽ ऽ । ऽ ऽ ।। ऽ । ऽऽ

जगण तगण जगण गुरु–गुरु = उपेन्द्रवज्रा

नवं वयः कान्तमिदं वपुश्च।

। ऽ । ऽ ऽ ।। ऽ । ऽ ऽ

अल्पस्य हेतोः बहुहातुमिच्छन्।

विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम्।।

इसमें दो चरणों (प्रथम तथा तृतीय) का छन्द इन्द्रवज्रा है। शेष दो (दूसरा तथा चौथा) चरणों का उपेन्द्रवज्रा है। अतः यह अर्द्ध–समवृत्त उपजाति छन्द है।

(ii) **उदाहरण –** (विषमवृत्त उपजाति)

जगण तगण जगण दो गुरु = उपेन्द्रवज्रा

क्षतात् किल त्रायत इत्युदग्रः

। ऽ । ऽ ऽ ।। ऽ ।ऽऽ

क्षत्रस्य शब्दः भुवनेषु रुढ़ः।

राज्येन किं तद् विपरीतवृत्तेः = इन्द्रवज्रा

प्राणैरुपक्रोशमलीमसैर्वा।

इस पद्य के प्रथम चरण में उपेन्द्रवज्रा **(जतजास्ततो गौ)** छन्द है। शेष तीन चरणों में इन्द्रवज्रा **(यदि तौ जगौ गः)** छन्द है। अतः एक समान मिश्रण न होने के कारण यहां विषमवृत्त उपजाति छन्द है।

(iii) **उदाहरण – सम उपजाति**

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवात्मा = इन्द्रवज्रा

हिमालयो नाम नगाधिराजः = उपेन्द्रवज्रा

5. वंशस्थ – (12 अक्षरों वाला समवृत्त) (ज, त, ज, र)

लक्षण – जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ

अर्थात् वंशस्थ छन्द के प्रत्येक पाद के जगण, तगण, जगण और रगण के क्रम से बारह अक्षर होते हैं।

उदाहरण –

जगण तगण जगण रगण

। ऽ। ऽऽ। । ऽ। ऽ।ऽ

भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः

नवाम्बुभिर्भुमिविलम्बिनो घनाः।

अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः

स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्।।

अन्य उदाहरण –

उदेति पूर्व कुसुमं ततः फलम्

घनोदयः प्राक् तदनन्तरं पयः।

निमित्त नैमित्तिकयोरयं क्रम

स्तव प्रसादस्य पुरस्तु सम्पदः।।

6. **वसन्ततिलका –** (चौदह अक्षरों वाला समवृत्त छन्द) (त, भ, ज, ज, ग, ग)

लक्षण – उक्ता वसन्ततिलका तभजाजगौ गः।

वसन्ततिलका छन्द के प्रत्येक पाद में तगण, भगण, जगण, जगण और दो गुरु के क्रम से 14 वर्ण होते हैं।

उदाहरण –

त भ ज ज ग ग

पापान्निवारयति योजयते हिताय

ऽ ऽ । ऽ ।। । ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

गुह्यान्निगूहति गुणान् प्रकटीकरोति।

आपद्गत च न जहाति ददाति काले

सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः।।

उदाहरण –

जाड्यं धियो हरति सिंचति वाचि सत्यम्

ऽ ऽ । ऽ । । । ऽ । । ऽ । ऽऽ

तगण भगण जगण जगण गुरु गुरु

मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।

चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिम्

सत्संगतिः कथ किं न करोति पुंसाम्।।

7. **मालिनी –** (15 अक्षरों वाला समवृत्त) (न, न, म, य, य)

लक्षण – ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।

मालिनी के प्रत्येक चरण में नगण, नगण, मगण, यगण, यगण के क्रम से 15 अक्षर होते हैं। इसमें आठ और सात वर्णो के पश्चात् यति होती है।

नोट – भोगी (सांप) द्विजिहव्रः आदि नाम भेद से आठ प्रकार का होता है।

लोक–सात लोक हैं।

अतः यहां भोगी 8 अक्षरों का तथा लोक सात अक्षरों का प्रतीक है।

उदाहरण –

न न म य य

जयतु जयतु देशः सर्वतन्त्रस्वतन्त्रः

। । । । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

प्रतिदिनमिह वृद्धिं यातु देशस्य रागः।

वज्रतु पुनरयं नो दासता मन्यदीयाम्

भवतु धनसमृद्धिः सर्वतो भावसिद्धिः।।

अन्य उदाहरण –

नगण नगण मगण यगण यगण

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूष पूर्णा

। । । । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

स्त्रिभुवनमुपकार–श्रेणिभिःप्राणीयन्तः।

परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं

निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः किन्तः।।

अन्य उदाहरण –

सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं

मलिनमपि हिमांशो र्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।

इयमधिकमनौज्ञा वल्कलेनापि तन्वी

किमिह कि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।।

8. शिखरिणी – (17 अक्षरों वाला समवृत्त) (य, म, न, स, भ, ल, ग)

लक्षण – रसैःरुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी

जब छन्द के प्रत्येक चरण में यगण, मगण, नगण, सगण, भगण और लघु गुरु के क्रम से 17 अक्षर हों तो उसे शिखरिणी कहते हैं। इसमें 6 तथा 11 वर्णों अनन्तर यति होती है। (रस = 6 और रुद्र = 11)

उदाहरण –

य म न स भ ल ग

अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहै

। ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । । । ऽ

रनाविद्धं रत्नं मधु नवमनास्वादितरसम् !

अखण्डं पुण्यानां फलमिह च तद्रूपमनघम्।

न जाने भोक्तारं कमिह समुहस्थास्यति विधिः।।

अन्य उदाहरण –

यगण मगण नगण सगण भगण लघु गुरु

यदा किंचिज्ज्ञोहं गज इव मदान्धः समभवम्

। ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ। । । ।। ऽ ऽ । । । ऽ

तदा सर्वज्ञोस्मीत्यभवद्वलिप्तं मम मनः।

यदा किंचित् किंचिद्बुधजन सकाशादवगतम्

तदा मूर्खोस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः।।

अन्य उदाहरण –

करे श्लाघ्यस्त्यागः शिरसि गुरुपादप्रणयिता

मुखे सत्या वाणी विजयि भुजयोः वीर्यमतुलम्।

हृदि स्वच्छा वृत्तिः श्रुतमधिगतंच श्रवणयो–

र्विनाप्यैश्वर्येण प्रकृतिमहतां मण्डनमिदम्।।

9. **शार्दूलविक्रीडितम्** – (उन्नीस अक्षरों वाला समवृत्त) (म, स, ज, स, त, त, ग)

लक्षण – सूर्याश्वैर्यदि मः स जौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्।

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण और गुरु के क्रम से 19 वर्ण होते हैं। इसमें 12 और 7 वर्णों के बाद यदि होती है। (सूर्य – 12 और अश्व 7 का प्रतीक है)

उदाहरण –

म स ज स त त ग

पातुं न प्रथमंव्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु

ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ।। । ऽ ऽ ऽ ।ऽ ऽ। ऽ

नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।

आद्ये वः कुसुम प्रवृत्ति समये यस्या भवत्युत्सवः

सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्।।

अन्य उदाहरण –

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया

कण्ठः स्तम्भितवाष्प वृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।

वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्योकसः

पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः।।

10. आर्या –

लक्षण – यस्याः प्रथमेपादे द्वादशमात्राः तथा तृतीयेऽपि।

अष्टदशा द्वितीये चतुर्थके पंचदश साऽऽर्या।।

अर्थात् जिसके प्रथम तथा तृतीय पाद में बारह–बारह (12–12) मात्राएँ हों और दूसरे पाद में अठारह (18) मात्राएँ तथा चौदे पाद में पन्द्रह (15) मात्राएं हों उसे आर्या छन्द कहते हैं। आर्या छन्द अनुष्टप् की भांति जाति या मात्रिक छन्द है। क्योंकि इसमें गण के द्वारा छन्द का नियंत्रण न होकर मात्राओं द्वारा होता है।

उदाहरण –

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।

ऽ ऽ। । ऽ ऽ ऽ ।।।। ऽ ऽ। ऽ ।ऽ ऽ ऽ

12 18

ज्ञानलव दुर्विदग्धं, ब्रह्मपि नरं न रंजयति।।

ऽ ।।। ऽ। ऽ ऽ ऽ ऽ।। ऽ। ऽ।। ऽ

12 15

अन्य उदाहरण –

आपरितोषाद् विदुषां, न साधु मन्ये प्रयोग विज्ञानम्।

बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः।।

अन्य उदाहरण –

अधरः किसलयरागः कोमल विटपानुकारिणी बाहू।

कुसुममिव लोभनीयं यौवनमंगेषु सन्नद्धम्।।

11. भुजंगप्रयातम् –

लक्षण – भुजंगप्रयातं चतुर्भिर्यकारैः।

अर्थात् भुजंग प्रयात में चार यगण के क्रम से 12 वर्ण होते हैं। इसमें छः वर्णों के पश्चात् यति (विराम) होती है। इस छन्द की ध्वनि भुजंग (सांप) की चाल के समान उतार–चढ़ाव युक्त होती हैं।

उदाहरण –

य य य य

धनै र्निष्कुलीनाः कुलीना भवन्ति

। ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽऽ । ऽ ऽ

धनैरापदं मानवाः निस्तरन्ति।

धनेभ्यः परो बान्धवो नास्ति लोके

धनान्यर्जयध्वं धनान्यर्जयध्वम्।।

अन्य उदाहरण –

सदारात्मजज्ञातिभृत्यो विहाय
स्वमेतं ह्रदं जीवनं लिप्समानः।
मया क्लेशितः कालियेत्थं कुरु त्वं
भुजंग प्रयातं द्रुतं सागराय।

अन्य उदाहरण –

सदारात्मजज्ञातिभृत्यो विहाय
स्वमेतं ह्रदं जीवनं लिप्समानः।
माया क्लेखितः कालियेत्थं कुरु त्वं
भुजंग प्रयातं द्रुतं सागराय।

12. मन्दाक्रान्ता –

लक्षण – मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम्।।

अर्थात् मन्दाक्रान्ता के प्रत्येक पाद में मगण, भगण, नगण दो तगण और दो गुरु क्रम से 17 अक्षर होते हैं। इसमें चार, छः सात वर्णों के बाद यदि होती है।

जलधि = 4, रस = 6, नग (नग) = 7 इन अक्षरों पर यति होती है।

उदाहरण –

म भ न त त गग
मौनान्मूकः प्रवचन पटु र्वार्तुलो जल्पको वा
ऽ ऽ ऽ ऽ।।।।। ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
धृष्टः पार्श्वे भवति च वसन्दूरतोऽप्यप्रगल्भः।
क्षान्त्या भीरुर्यदि न सहसे प्रायशो नाभिजातः
सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः।।

अन्य उदाहरण –

नैतच्चित्रं यदयमुदधिश्यामसीमां धरित्री
मेकः कृत्स्नां नगरपरिघप्रांशु बाहु र्भुनक्ति।
आशंसन्ते समितिषु सुरा बद्धवैरा हि दैत्यै
रस्याधिज्ये धनुषि विजयं पौरुहूते च वज्रे।।

13. स्रग्धरा –

यह इक्कीस वर्णों का समवृत्त छन्द है। इसमें प्रत्येक सात वर्णों के पश्चात् अर्थात् सातवें, चौदहवें और इक्कीसवें अक्षरों पर यति होती है।

लक्षण – "म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्।"

अर्थात् जिसमें क्रमशः मगण, रगण, भगण, नगण, तीन यगण हों तथा तीन बार मुनि अर्थात् (सात, सात, सात) वर्णों के बाद यति हो, स्रग्धरा छन्द कहते हैं।

ऽ ऽऽ ऽ।ऽऽ।।।।।।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ

या स्रष्टुः सृष्टिराद्या वहति विधिहुतं या हवि र्या च होत्री

म र भ न य य य

ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषय गुणा या स्थिता विश्व व्याप्यम्।

यामाहुः सर्वबीज प्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः

प्रत्यक्षाभिः प्रसन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः।।

2.4 अपनी प्रगति जांचिए

1 जो रचना अक्षर, मात्रा, गति, यति आदि नियमों से युक्त होती है, उसे क्या कहते हैं ?

2 छन्द–शास्त्र के प्रवर्तक कौन माने जाते हैं ?

3 छन्द–शास्त्र का अन्य नाम क्या है ?

4 छन्द के मध्य में विश्राम स्थल (अर्द्ध–विराम) को क्या कहते हैं ?

5 छन्द–शास्त्र में तीन–तीन अक्षरों के समूह को क्या कहते हैं ?

2.5 सारांश

जो रचना अक्षर, मात्रा, गति, यति आदि नियमों से युक्त होती है उसे छन्द कहते हैं। छन्दों के मुख्य रूप से दो भेद हैं – वर्णिक छन्द और मात्रिक छन्द। वर्णिक छन्द को वृत्त तथा मात्रिक छन्द को जाति छन्द भी कहते हैं। वर्णिक छन्दों के चरणों में गुरु–लघु–क्रम प्रायः समान होता है, परन्तु मात्रिक छन्दों में यह बन्धन नहीं होता। इस प्रकार प्रस्तुत इकाई में छन्द के स्वरूप उसके भेद तथा प्रमुख 12 छन्दों का विवेचन किया गया। वह प्रमुख छन्द निम्नलिखित है – अनुष्टुप्, आर्या, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, मालिनी, स्रग्धरा, वंशस्थ, शिखरिणी, मन्दाकान्ता, वसन्ततिलका तथा शार्दूलविक्रीडितम्। उपर्युक्त छन्दों के लक्षण तथा उदाहरणों द्वारा इनका विवेचन किया गया है।

2.6 मुख्य शब्दावली

- **छन्द –** जो रचना अक्षर, मात्रा, गति, यति आदि नियमों से युक्त हो।
- **गण –** छन्द–शास्त्र में तीन–तीन अक्षरों के समूह
- **यति –** छन्द के मध्य में विश्राम स्थल (अर्द्ध–विराम)
- **गति –** श्लोक का धारा प्रवाह में पढ़ा जाना
- **सम–छन्द –** चारों चरणों में वर्ण या मात्राएं समान होती हैं।

2.7 अपनी प्रगति जांचिए के उत्तर

1 छन्द

2 पिंगल ऋषि

3 वृत्तशास्त्र

4 यति या विराम

5 गण

2.8 अभ्यास हेतु प्रश्न

1 छन्द के स्वरूप का विश्लेषण कीजिए।

2 छन्द के भेदों का विवेचन कीजिए।

3 यति तथा गति की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

4 मन्दाकान्ता तथा अनुष्टुप छन्दों के लक्षण तथा उदाहरणों का विश्लेषण कीजिए।

5 सम–छन्द, अर्थ–समछन्द तथा विषम छन्द का विवेचन कीजिए।

2.9 आप ये भी पढ़ सकते हैं

1 छन्दोऽलंकाराः–डॉ० त्रिलोकीनाथ द्विवेदी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

2 संस्कृत छन्द प्रवेशिका – रवि कुमार मीना, सुभाष चन्द्र

3 संस्कृत व्याकरण एवं छन्दोज्ञान – रमेश चन्द्र, रचना प्रकाशन, जयपुर

4 संस्कृत काव्य शास्त्र एवं काव्यांग (रस, अलंकार, छन्द) – डॉ० प्रीतिप्रभा गोयल, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर

5 छन्दःशास्त्रम् – श्री पिंगल ऋषि, निर्णय सागर प्रकाशन, मुंबई